''आतंकवाद वैश्विक संकट, चुनौती एवं समाधान''

कल्लन सिंह मीना
व्याख्याता, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गंगापुर सिटी (राजस्थान)

सारांश

आज आतंकवाद वैश्विक स्तर पर सबसे ज्वलंत समस्या है। इसका घिनौना रूप और अधिक बर्बर, हिंसक व क्रूर होता जा रहा है। विश्व का लगभग प्रत्येक देश इससे पीड़ित है। आतंकवाद लोकतांत्रिक व संवैधानिक व्यवस्था पर हमला कर रहा है। मानव जाति के लिए आतंकवाद सबसे बडा संकट एवं चुनौती बन गया है। आज विश्व में अनेक आतंकवादी संगठन सक्रिय है जो मानव जाति, अन्तर्राष्ट्रीय शांति व मानवाधिकारों के लिए सबसे बड़ा खतरा व संकट है। भारत एक बड़ा लोकतांत्रिक देश है तथा आतंकवाद से पीडित है। आतंकवादी, विश्व में आतंकी घटनाओं को अंजाम दे रहे है। आज विश्व में आतंकवाद फैलने के अनेक कारण है जिसमें धार्मिक कट्टरता, एक दूसरे देशों में अविश्वास व असहयोग की भावना, महाशक्तियों की स्वार्थपूर्ण नीति प्रमुख हैं। आतंकवाद के कारण विश्व के समक्ष अनेक समस्या व चुनौतियॉ आ रही है। विश्व शांति पर खतरा मडरा रहा है। लेकिन अब आतंकवाद को समाप्त करने के लिए विश्व समुदाय को बड़ी सजगता व ईमानदारी से कार्य करने की आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ व अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के माध्यम से आतंकवाद के खिलाफ कठोर कार्यवाही की जरूरत है। आतंकवाद की लड़ाई को आपसी विश्वास, एकता, दृढ इच्छा शक्ति, सहयोग, सक्रियता, सजगता, कठोर निर्णय एवं विशेष सुरक्षा प्रबन्ध आदि से ही जीता जा सकता है।

मुख्य शब्द :– *आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता, अन्तर्राष्ट्रीय शांति, आंतकवादी घटनाएॅ, संयुक्त राष्ट्रसंघ, महाशक्तियॉ, मानवाधिकार, रासायनिक व जैविक हथियार, लोकतंत्र, आर्थिक विकास ।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:
कल्लन सिंह मीना,
''आतंकवाद वैश्विक संकट, चुनौती एवं समाधान''
शोध मंथन,
सितम्बर 2017,
पेज सं0 100–108
http://anubooks.com/?page_id=581
Artcile No.16 (SM 454)

प्रस्तावना :–

आज विश्व के समक्ष सबसे ज्वलंत एवं विभत्स संकट आतंकवाद है, जिससे दुनिया का प्रत्येक राष्ट्र अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रहा है, क्योंकि यह अपनी सीमाओं से बाहर निकलकर सम्पूर्ण विश्व के ऊपर विषैले बादलों के रूप में मंडरा रहा है। जो किसी भी समय कही पर भी हिंसक, विषैली, दहशत, विनाशकारी बिजली गिरा सकता है जिससे बचना मुश्किल हो रहा है। आतंकवादी घटनाएं बढती ही जा रही हैं। इसका घिनौना रूप और भी अधिक बर्बर, हिंसक व क्रूर होता जा रहा है। विश्व का लगभग प्रत्येक देश आतंकवाद से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित है दक्षिण एशियाई देश, अरब देश, अफ्रिकी महाद्वीप, यूरोपियन देश, दक्षिण पूर्वी एशियाई देश, अमेरिका, रूस आदि सभी आतकंवाद से पीड़ित हैं। आज आतंकवाद ने वैश्विक रूप धारण कर लिया है। आतंकवादी लोकतांत्रिक व संवैधानिक शासन व्यवस्था पर हमला कर रहे है। वैश्विक स्तर पर आतंकवाद सबसे ज्वलंत समस्या है। आज आतंकवाद से तीसरी दुनिया के राष्ट्र, अविकसित, विकासशील एवं विकसित राष्ट्र सभी पीड़ित हैं विश्व समाज के लिए आतंकवाद सबसे बड़ा संकट एवं चुनौती बन गया है।

आतंकवाद का कोई एक निश्चित अर्थ व परिभाषा नहीं है। देश, काल, परिस्थिति, वातावरण, स्थान व राष्ट्र की सीमाओं, विदेश नीति, राष्ट्रहित, सुरक्षा के अनुसार इसके अर्थ बदलते रहते हैं। सामान्यतः किसी देश या राष्ट्र की वैधानिक सम्प्रभुता पर हिंसात्मक हमला करना, निर्दोष आम जनता में हिंसा व असुरक्षा का भय पैदा करना है। सामान्यतः आतंकवाद हिंसा व अवैधानिक तरीके से किसी काम को करवाना है। आतंकवादी अपने धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, विचारधारा के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हिंसक, क्रूर, बर्बर एवं अमानवीय, गैरकानूनी साधनों के माध्यम से किसी देश में अशांति, हिंसा, भय व असुरक्षा का वातावरण उत्पन्न करके अपनी विध्वंस व विनाशकारी विचारधारा को थोपना है। यूरोपीयन संघ के मसौदे के अनुसार हत्या और अगवा करना , जहरीले रसायन फैलाना, यातायात के साधनों को छीनना, कम्प्यूटर नेटवर्क को समाप्त करना आतंकवाद की श्रेणी में आता है। आतंकवाद एक ऐसा ज्वालामुखी है जो विश्व के किसी भी भाग में फट कर विनाशकारी अग्नि से जला सकता है। आतंकवाद की कोई एक सर्वमान्य परिभाषा नही होने के कारण राष्ट्रीय स्तर व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसके विरूद्ध कोई ठोस कार्यवाही नहीं हो रही है जिसका लाभ आतंकी संगठन व आतंक को पनाह देने वाले देश उठा रहे हैं।

आतंकवादी संगठन अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए देश में स्थापित शासन व्यवस्था को समाप्त कर अपनी विचारधारा की शासन व्यवस्था स्थापित करना चाहते हैं, जिसमें हिंसक व अमानवीय गतिविधियां काम में ली जाती हैं। धार्मिक कट्टरता से धार्मिक आतंकवाद फैलता है, धर्म के नाम पर जनता को भडकाना, अपने धर्म को विश्व का सर्वश्रेष्ठ धर्म बताकर ज्यादा से ज्यादा प्रचार प्रसार करना व दूसरे धर्म के लोगों को शैतान व काफिर बताकर नफरत भरी नजरों से देखना व उनकी हत्या करना। आज आतंकवादी आणविक हथियार,

रासायनिक हथियार व जैविक हथियार काम में लेते है। एंथ्रेक्स हमले में एयर क्राफ्ट के माध्यम से घनी आबादी वाले क्षेत्रों में महामारी फैलाने वाले खतरनाक रसायनिकों का छिडकाव करते हैं जिसमें चेचक, हेजा, प्लेग, डेंगू, स्वाइन फ्लू, एन्थ्रेक्स आदि के विषैले जीवाणुओं को फैलाकर आतंकवादी, मानवजाति का विनाश करना चहाते हैं। आज मानव जाति के लिए परमाणु व रसायनिक हथियारों से ज्यादा खतरनाक जैविक हथियार हैं। आतंकवादियों के पास अगर जैविक हथियार आते है तो यह मानव जाति के लिए बहुत बडा संकट है।

आज विश्व में अनेक आतंकवादी संगठन सक्रिय है जो मानव जाति व अन्तर्राष्ट्रीय शांति के लिए सबसे खतरनाक है। जिसमें इस्लामिक स्टेट ईराक एंड सीरिया (आई.एस.आई.एस.) आर्थिक दृष्टि, आधुनिक हथियार व तकनीक से मजबूत, जिसका उद्देश्य विश्व में हिंसा फैलाकर इस्लामीकरण व शरिया कानून लागू करना है। तालिबान, अफगानिस्तान में जो मानवीय सभ्यता व संस्कृति का विनाशक है। अलकायदा, ओसामा बिन लादेन द्वारा बनाया जिसमें उच्च तकनीकी शिक्षा प्राप्त लोगों को आतंकवादी गतिविधियों के लिए आधुनिक तकनीक व बम बनाने का प्रशिक्षण दिया। इस आतंकी संगठन ने अमेरिका में आतंकी हमला किया। अमेरिकी सेना ने 2011 में ओसामा बिन लादेन को मार दिया जिससे यह संगठन कमजोर हो गया। जैश ए मोहम्मद, लश्कर ए तैयबा, हिजबुल मुजाहिद्दीन भी पाकिस्तानी आतंकी संगठन जिनका उद्देश्य भारत में आतंकवाद फैलाना है। इंडियन मुजाहिद्दीन भारत में आतंकी घटनाएं करता है। अल नुसरा फ्रंट यह संगठन सीरिया में सक्रिय है। बोको हरम नाइजीरिया का खूंखार व बर्बर आतंकी संगठन, पश्चिमी शिक्षा व संस्कृति का दुश्मन आदि हैं।

भारत एक बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है एवं विकास की नई ऊचाईयां छू रहा है जिसमें कुछ पडैसी देश एवं विश्व के कुछ बडे देश भारत में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली एवं उसके चहुमुखी विकास से चिंतित हैं क्योंकि इससे उनकी चौधराही खतरे में है वे इस चौधराही से विश्व के कमजोर व गरीब देशों का शोषण करते है एवं अपनी हुकूमत चलाते रहते है, उन्हें चिंता है कि अगर भारत इसी तरह विकास करता रहा तो एक दिन विश्व में बहुत ताकतवर राष्ट्र बन जायेगा। जिससे विश्व में लोकतन्त्र की लहर चलेगी जिसके कारण विश्व के अन्य ताकतवर देश, गरीब, अविकसित व विकासशील देशों का शोषण नहीं कर पायेंगे। उनका औधोगिक व्यापार समाप्त हो जायेगा। विश्व में शांति होने से उनका हथियारों का उद्योग बन्द हो जायेगा। कुछ देशों में कुछ मुट्ठी भर परिवारों या वंशों की शासन व्यवस्था है उसका अन्त निश्चित रूप से हो जायेगा। क्योंकि लोकतन्त्र में जनता का शासन होता है। पडौसी मुल्क पाकिस्तान भारत में आतंकवाद फैलाता रहा है, क्योंकि यें भारत को अपना मित्र नहीं मानता है जबकि भारत हमेशा विश्व शांति व जियों और जीने दो की नीति में विश्वास करता है। विश्व के सभी देशों व पडौसी देशों के साथ मधुर, मैत्री, अनाक्रमण, सहअस्तित्व, शांति व भाई चारे की विदेश नीति में विश्वास करता है। लेकिन भारत आतंकवाद से लम्बे समय से पीडित है। पाकिस्तान स्वयं आन्तरिक गृह युद्ध से पीड़ित है लोकतन्त्र नाम मात्र का है सेना के इशारे पर शासन को चलाया जा रहा है कई बार सैनिक क्रांति हो चुकी है। अतः वह अपनी आतंरिक कमजोरियों को छुपाने एवं लोकतांत्रिक शासन

व्यवस्था को कमजोर करने के लिए भारत में अपनी खुफिया एजेन्सी आई0एस0आई0 एवं अपने आतंकी संगठनों के माध्यम से भारत में आतंकवाद फैला रहा है। भारत में जम्मू कश्मीर आतंकवाद से सबसे ज्यादा प्रभावित है। जम्मू कश्मीर में विधान सभा पर हमला, सेना कैम्पों पर हमला। पाकिस्तान भारत में अनेक तरह से आतंकी गतिविधियों को अंजाम देता है जैसे– फिदाईन आत्मघाती दस्तों का प्रयोग, उग्रवादी गतिविधियों में स्थानीय युवकों को लालच देकर व गुमराह करके शामिल करना है। आतंकवादियों को आर्थिक सहयोग, धार्मिक कट्टरता के नाम पर निर्दोष लोगों की हत्या, गोलीबारी करके सीमा पार से आतंकवादियों की घुसपैठ करना इत्यादि। लेकिन उनके यें गलत मनसूबे कभी पूरे नहीं होंगे।

आज आतंकवाद से भारत, अमेरिका, रूस, फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन, चीन, स्पेन, टर्की, इण्डोनेशिया, फिलिपीन्स, मिश्र, सूडान, अल्जीरिया, नाइजीरिया, केन्या, कांगो, अफगानिस्तान, सीरिया, ईराक, इरान, यमन, फिलिस्तीन, इजराइल, पाकिस्तान आदि देश इससे पीडित हैं। आतंकवादियों द्वारा भारत सहित विश्व के अनेक स्थानों पर आतंकी घटनाओं को अंजाम दिया है भारत में महत्वपूर्ण शहरों, धार्मिक स्थानों को निशाना बनाया जिनमें प्रमुख आतंकी घटनाएँ हजरत बल दरगाह (श्रीनगर), बम्बई बमकाण्ड, अक्षरधाम मन्दिर कोलकता, नई दिल्ली, वाराणसी, मालेगॉव (महाराष्ट्र) मुम्बई ट्रेनों में आतंकी बम धमाका, मक्का मस्जिद हैदरावाद, समझौता एक्सप्रेस ट्रेन में बम धमाका, दरगाह शरीफ अजमेर, जयपुर बम विस्फोट, बेंगलूर, अहमदावाद, असम, भारतीय संसद नई दिल्ली, 26 नवम्बर 2008 को मुम्बई के ताज होटल व रेल्वे स्टेशन पर आतंकी हमला, 2जनवरी 2016 को वायुसेना स्टेशन पठानकोट (पंजाब), 18 सितम्बर 2016 को उरी सेक्टर (जम्मू कश्मीर) में एलओसी के पास स्थित भारतीय सेना के स्थानीय मुख्यालय पर आतंकी हमला। जुलाई 2017 को अनंतनाग में अमरनाथ यात्रियों पर आतंकी हमला। विश्व के विभिन्न देशों में भी आतंकी हमले होते रहे है जिनमें 11 सितम्बर 2001 को संयुक्त राज्य अमेरिका में आतंकी संगठन अलकायदा ने हवाई जहाजों का अपहरण कर वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर व ट्वीन टॉवर्स (न्यूयॉर्क) आदि के साथ टकराकर आतंकी घटना को अंजाम दिया। वाली (इण्डोनेशिया), मास्को (रूस), मैड्रिड ट्रेन बम विस्फोट, बेसलान (रूस), श्रीलंका में 2006 में लिट्टे के द्वारा श्रीलंकाई सैनिकों की हत्या, लन्दन बम धमाका, बमाको (माली), ब्रसेल्स, तुर्की के शहर इस्तांबुल, इण्डोनेशिया की राजधानी जकार्ता, फ्रांस के शहर नीस, बांग्लादेश की राजधानी ढाका, अफगानिस्तान की राजधानी काबुल, तुर्की के हवाई अड्डे पर आतंकी हमला, सीरिया की राजधानी दमिश्क, 22 अप्रैल 2017 को अफगानिस्तान में सैनिक अड्डे पर आंतकी हमला, 23 मई 2017 को मैनचेस्टर (ब्रिटेन) में आत्मघाती बम धमाका, 7 जून 2017 को ईरान में ईरानी संसद, खोमैनी मेट्रो स्टेशन, खौमैनी के मकबरे पर आंतकी हमला, 8 जून 2017 को सोमालिया में अल शबाव के आतंकियों ने सैनिक अड्डे पर हमला कर कई सैनिकों की हत्या कर दी ।

आज विश्व में आतंकवाद फैलने का कोई एक कारण नहीं है बल्कि इसके पीछे अनेक कारण हैं। आज के भौतिकवादी समाज में दिन प्रतिदिन धार्मिक कट्टरता बढती जा रही है। आज आतंकवाद के प्रमुख कारणों में धार्मिक कट्टरता व धार्मिक उन्माद है धर्म की रक्षा के नाम पर

आतंकवाद को जायज ठहराते है। हिंसा को उचित मानते हुए जन्नत का मार्ग बताते है। आज कुछ कट्टरपंथी, मानवता के दुश्मन व असामाजिक तत्व धर्म की आड में कट्टरता फैला रहे है। जेहाद के नाम पर लोगों को आतंकवाद के रास्ते पर ले जा रहे है। वैज्ञानिक तकनीक, मीडिया ने आज वैश्विक आतंकवाद को बढाने में आशातीत वर्षद्धि की है। आज छोटी छोटी आतंकी घटनाओं को टेलीविजन व समाचार पत्रों में प्रमुखता से दिखाया जाता है। वैज्ञानिक तकनीक से परमाणु हथियार, रसायनिक हथियार व जैविक हथियार तैयार कर रहे है। इन्टरनेट के माध्यम से आतंकवादी संगठन आपस में एक दूसरे से जुडकर पूर्ण सहयोग कर रहे है एवं अपनी आतंकी गतिविधियों व कार्य प्रणाली को साझा कर रहे है। जिससे आतंकवादी संगठन मजबूत हो रहे हैं। हमारे सुरक्षा बल जब आतंकवादियों को गॉवों व घरों में ढूंढते हैं तो कुछ असामाजिक तत्व उनके बचाव में ढाल बनकर सामने आ जाते है जैसा कि पिछले कुछ महिनों से कश्मीर में ऐसा हुआ है उन असामाजिक तत्वों पर सुरक्षा बल कार्यवाही करते है तो मीडिया मानवाधिकारों का उल्लंघन बताता है जिससे सुरक्षा बलों को कार्यवाही करने में परेशानी आती है। आज मीडिया समाचार पत्रों, टेलीविजन के माध्यम से आतंकी घटनाओं को बार बार उन्हें अपने चैनलों पर दिखाता है, जिससे आंतकवादियों के होसले बढते हैं क्योंकि उनकी आतंकी घटनाओं का प्रचार प्रसार होता है सारी दुनिया देखती है। जनता में भय पैदा होता है।

महाशक्तियों की स्वार्थपूर्ण नीतियों के कारण भी विश्व में आतंकवाद फैला है। क्योंकि इन महाशक्तियों ने अपने औद्योगिक विकास के लिए तीसरी दुनिया व तेल उत्पादक देशों से कच्चा माल लिया व बदले में उन देशों में उन देशों के आतंकवादी संगठनों का सहयोग कर उन देशों में अशांति, हिंसा व गृहयुद्ध की स्थिति पैदा कर अपने हथियारों को इन देशों की सरकारों व उस देश के आतंकी संगठन दोनों को बेचा एवं उन आतंकी संगठनों का उपयोग शत्रु राष्ट्रो की सरकारों को अस्थिर कर आर्थिक विकास को रोकने के रूप में किया एवं गरीब व विकासशील देशों को आतंकवाद के नाम पर डराकर हथियारों को बेचा व उन देशों में हस्तक्षेप किया जिसका परिणाम विश्व के सामने आतंकवाद के रूप में आया । जिस अमेरिका ने तालिबान को तत्कालीन सोवियतसंघ के खिलाफ तैयार किया बाद में वही तालिबान व अलकायदा अमेरिका के लिए भस्मासुर साबित हुआ। लेकिन आज अमेरिका आतंकवाद के खिलाफ युद्ध लड रहा है व आतंकी अड्डों को समाप्त करने में लगा है पाकिस्तान अमेरिका के साथ आतंकवाद के खिलाफ लड़ने की बात करता है जबकि वह भारत में आतंकवाद फैलाने वाले आतंकियों को प्रशिक्षण व सहयोग दे रहा है। लेकिन अमेरिका अब पाकिस्तान पर आतंकवाद रोकने के लिए लगातार दबाव बना रहा है। अमेरिका को महसूस हो रहा है कि पाकिस्तान एक परमाणु शक्ति सम्पन्न देश है। लेकिन ये परमाणु हथियार यदि आतंकी संगठनों के हाथ लग गये तो विश्व में तबाही मच सकती है। मानव जाति का विनाश हो सकता है।

सामाजिक असमानता, शोषण, गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, अन्याय, राजनीतिक सत्ता की भूख, क्षेत्रीय असमानता, क्षेत्रीय महत्त्वाकांक्षा, राजनीतिक इच्छा शक्ति की कमी, समाजिक मूल्य व नैतिक शिक्षा की कमी, शासन पर एक वंश या कुल का आधिपत्य, समाज की सामन्तवादी

सोच, दलित, आदिवासी व महिलाओं का शोषण, जातिय वर्चस्व की लड़ाई, कुंठा, क्रोध, बदले की भावना, नकारात्मक इच्छा की पूर्ति नहीं होना आदि आतंकवाद के मुख्य कारण हैं। क्योंकि जिस राष्ट्र व समाज में ये समस्या होती हैं वहॉ पर आतंकी वहॉ की जनता को आसानी से गुमराह कर हिंसा के मार्ग पर धकेल देते है। क्योंकि वे लोगों को काल्पनिक सपने दिखाते है लेकिन आतंकियों को समाज की समस्याओं से मीलों तक कोई वास्ता नहीं होता। उनका मात्र एक उद्देश्य होता है राजनीतिक सत्ता को अस्थिर कर हिंसा फैला कर आतंकी सत्ता स्थापित करना। आज विश्व में महाशक्तियों व पडौसी देशों के बीच वर्चस्व की लडाई लगातार बढती जा रही है अपने वर्चस्व को बढाने के लिए ये देश उसके विरोधी राज्यों में आतंकवादियों का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करते हुए विरोधी राष्ट्र को कमजोर करने के लिए आतंकवादियों, विद्रोहियों के माध्यम से अपनी चाल चल रहे है। देश के विकास में राजनैतिक भेदभाव के कारण विकास कार्यो को सम्पूर्ण देश में समान रूप से नहीं कर क्षेत्र विशेष का अत्यधिक विकास करना व अन्य क्षेत्रों की घोर उपेक्षा करने के कारण आतंकवाद फैलता है।

आतंकवाद के कारण विश्व के सामने अनेक समस्या, संकट, चुनौती एवं इसके दुष्परिणाम आ रहे है। आतंकवाद, लोकतन्त्र का सबसे बड़ा शत्रु है क्योंकि लोकतन्त्र मानव कल्याण व विश्व शांति का शासन है जबकि आतंकवाद मानव जाति का विनाश, विश्व हिंसा, क्रूरता, बर्बरता भरा निरंकुश शासन स्थापित करना चाहता है। आतंकवाद मानव जाति के लिए बहुत बड़ा संकट व एक कलंक है जिससे हिंसा, घृणा, पाशविकता, क्रूरता, अराजकता पैदा हो रही है। आतंकवाद आर्थिक विकास का सबसे बड़ा शत्रु है वह मानव संस्कृति व सभ्यता को हजारों वर्श पीछे धकेलना चाहता है वह नहीं चाहता की मनुष्य आर्थिक विकास कर सुख व शांति का जीवन जीये। आतंकवाद व्यक्ति के मानवाधिकारों का सबसे बड़ा शत्रु है क्योंकि जहां आतंकवाद होगा वहॉ व्यक्ति के मानवाधिकार सम्पूर्ण रूप से नष्ट हो जायेंगे। क्योंकि आतंकवादी हिंसा, क्रूरता, निर्दयता में पूर्ण विश्वास करते है जो मानवाधिकारों के सबसे बड़े शत्रु है। आतंकवादी विश्व को संकीर्ण मानसिकता भरे समाज के रूप में स्थापित करना चाहते हैं। जिससे समाज में धार्मिक कट्टरता पैदा हो। समाज व देश, जातियों, वर्गो व सम्प्रदायों में बटे जिससे देश व समाज में हमेशा हिंसा भरा वातावरण बना रहे। लोग आपस में लडाई व युद्ध करते रहें एवं किसी भी प्रकार का सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक विकास नहीं कर सकें।

आतंकवाद के कारण आज सरकारें अपने देश की सुरक्षा के लिए बजट के बडे हिस्से को सुरक्षात्मक कार्यो में खर्च कर रही है। जिससे सरकार देश के विकास कार्यो को पूरी तरह से नहीं कर पा रही है। आतंकवाद महिलाओं का सबसे बडा शत्रु है आतंकी, महिला शिक्षा, अधिकार, आर्थिक विकास, सामाजिक समानता आदि के सख्त विरोधी हैं। महिलाओं का पूर्ण रूप से शोषण करते है। धर्म निरपेक्ष शासन व्यवस्था पर हमला कर कट्टरपंथी शासन स्थापित करना। देश के सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक, आर्थिक ढांचे पर हमला, साम्प्रदायिक व जातिय हिंसा फैलाकर देश की एकता व अखण्डता को समाप्त कर देश में अराजकता व आतंक का माहौल

पैदा करना। वैश्विक अर्थव्यवस्था पर संकट पैदा हो रहा है। आज विश्व के सामने जैव आतंकवाद का खतरा पैदा हो गया है। आतंकवाद के कारण आतंकवाद से प्रभावित क्षेत्रों का पर्यटन व्यवसाय पूरी तरह चौपट हो जाता है। जिसके कारण गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी की समस्या पैदा होती है। क्षेत्र का आर्थिक विकास रूक जाता है आज धरती का स्वर्ग माना जाने वाला कश्मीर आतंकी गतिविधियों से अशांत क्षेत्र बना हुआ है। इसलिए यहॉ पर बहुत कम पर्यटक आते है। आतंकवाद से प्रभावित देशों में विदेशी निवेशक अपना औद्योगिक व्यवसाय करने से हिचकते हैं जिससे औद्योगिक विकास रूक जाता है।

आतंकवाद को समाप्त करने के लिए विश्व समुदाय को बडी सजगता व ईमानदारी से कार्य करने की आवश्यकता है जो देश आतंकवाद का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग (जैसे आतंकवाद का समर्थन, आर्थिक सहयोग, प्रशिक्षण, पनाह देना आदि) करता है ऐसे देश के प्रति संयुक्त राष्ट्रसंघ, अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों , क्षेत्रीय संगठनों, आर्थिक संगठनों व अन्तर्राष्ट्रीय कानून के माध्यम से सख्त व कठोर कार्यवाही करनी चाहिए। ऐसे देशों को अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर अलग थलग कर देना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र संघ चार्टर के प्रावधान के अनुसार विश्व के सभी राष्ट्रो को निष्पक्ष व ईमानदारी से आतंकवादियों के प्रशिक्षण स्थल व अड्डों को नेस्तनाबूद (नष्ट) कर देना चाहिए। विश्व संसद संयुक्त राष्ट्रसंघ की जिम्मेदारी है विश्वशांति, लोकतन्त्र की रक्षा, मानवाधिकारों की रक्षा, निरंकुश शासन का अन्त एवं आतंकवाद का अन्त करना लेकिन यू0एन0ओ0 यह कार्य तभी कर सकता है। जब महाशक्तियॉ अनावश्यक रूप से हस्तक्षेप नहीं करें एंव इसे और अधिक अधिकार व स्वायत्तता दी जाये। सुरक्षा परिषद में तीसरी दुनिया के विकासशील देशों जैसे भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रिका आदि देशों को सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनाया जावे।

सभी देशों की खुफिया एजेंसी, जॉच एजेंसी को उच्च तकनीकी प्रशिक्षण दिया जावे, उन्हें पूर्ण संसाधन उपलब्ध कराये जावे, राजनीतिक दखल पर नियंत्रण लगाया जावे, इनकी गोपनीय रिपोर्टों को गंभीरता से लेकर तुरन्त कार्यवाही की जावें । हमारी खुफिया एजेन्सीयों व स्थानीय पुलिस को तालमेल बैठाकर, अत्यधिक गोपनीय व सतर्कता से कार्य करने की आवश्यकता है क्योंकि कोई भी आतंकी स्थानीय असामाजिक तत्वों की मदद के बिना आतंकी हमला नहीं कर सकता । इसके लिए अधिक सक्रियता, पारदर्शिता व आधुनिक तकनीक से कार्य करने की आवश्यकता है। अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं की चौकसी की अति आवश्यकता, विशेषकर समुद्री सीमाओं की सुरक्षा। भारत में 26/11 मुम्बई हमले के आतंकी समुद्री मार्ग से ही आये थे। आतंकवादियों को वित्तीय सहयोग उपलब्ध कराने वाले नेटवर्क को तोड़ना अति आवश्यक है क्योंकि जब आतंकवादियों के पास धन की कमी होगी तो वे अत्याधुनिक हथियार तैयार नहीं कर सकेंगे एवं धन की लालच देकर भोले भाले नौजवानों को आतंक के रास्ते पर नहीं धकेल सकेंगे। जेहादी शिक्षा, मीडिया की नकारात्मक सोच पर नियंत्रण, आतंकवाद को बढावा देने वाले साहित्य व पत्र पत्रिकाओं पर पाबन्दी की आवश्यकता है। क्योंकि जिन साहित्य व पत्र पत्रिका के माध्यम से आतंकवाद को महिमा मंडित किया जाता है। उससे समाज के मन व आत्मा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सशस्त्र सुरक्षा बलों का आधुनिकीकरण किया जाये उन्हें वैज्ञानिक तरीके से उच्च कोटि का प्रशिक्षण दिया जावे उनके मनोबल को मजबूत किया जाये उन्हें आधुनिक स्तर के हथियार एवं सुविधाएँ उपलब्ध करायी जावे जिससे वे आतंकवादियों का मुकाबला पूरी ताकत व ऊर्जा के साथ करके जड से खत्म कर सके। आतंकवादी घटनाओं के जुडे मामलों की सुनवाई निष्पक्ष व त्वरितगति से करते हुए अपराधियों को सजा देनी चाहिए। जिससे आतंकियों में डर पैदा हो व समाज में आत्मविश्वास व सुरक्षा की भावना पैदा हो। आतंकवाद विरोधी कानूनों को पुनः सख्त एवं पारदर्शी बनाने की आवश्यकता जिसमें निर्दोष व्यक्ति प्रताडित नहीं हो एवं दोषी व्यक्ति कानून से किसी कीमत पर बच नहीं पायें । सरकार को धार्मिक उन्माद व कट्टरता फैलाने वाले असामाजिक तत्वों के खिलाफ कठोर कदम उठाने की आवश्यकता। विश्व के सभी देशों को एक मंच पर आकर आतंकवादी रूप राक्षस का समूल विनाश करना होगा। इसके विरूद्ध अन्तर्राष्ट्रीय जनमत तैयार करना होगा। सरकार व प्रशासन को बडी सजगता, ईमानदारी, पारदर्शिता के साथ कार्य करते हुए विकास कार्यो व गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा को बिना किसी भेदभाव, वोट की राजनीति व तुष्टीकरण की नीति से ऊपर उठकर गरीब, दलित, आदिवासियों, पिछडों व महिलाओं की झोपडी तक पहुँचाना होगा। प्राकृतिक संसाधनों के अवैध दोहन को रोकर न्यायपूर्ण एवं समान वितरण एवं उनके हितों को ध्यान रखते हुए कार्य करना होगा।

निष्कर्ष—

आतंकवाद 21 वीं सदी का ऐसा दैत्य या राक्षस है जो मानव जाति, सभ्यता, संस्कृति, लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था, शांति, भाई चारा, धार्मिक सद्भावना, सहिष्णुता, उन्नति आदि सभी को नष्ट करना चाहता है। जिसका कोई मित्र नहीं सम्पूर्ण मानव जाति शत्रु है। इसका न धर्म है न ईमान है, वस है तो हिंसा, क्रूरता, बर्बरता, निर्दयता, अत्याचार, अराजकता व मानव जाति का विनाश। आज समाज में नृशंस हत्या व बर्बरता का माहौल एक आतंकी गतिविधि है। आतंकवाद आज समाज में मध्ययुग का वातावरण पैदा कर रहा है। जैसे मध्य युग में होता था खून का बदला खून इसी तरह आज आतंकी निर्दोष लोगों के खून के प्यासे हो गये है। आज आतंकी कबायली इलाकों में अपने संगठनों को मजबूत कर सक्रिय कर रहे है क्योंकि यहाॅ पर समाज के लोगों को कोई अधिकार व स्वतन्त्रता नहीं है। महिलाओं को तो बिल्कुल भी नही। लेकिन इतिहास इस बात का गवाह है कि जब जब पृथ्वी पर आसुरी शक्तियॉ बढी तो उनका विनाश भी निश्चित रूप से हुआ है। अतः आसुरी शक्ति रूपी आतंकवाद का अन्त निश्चित रूप से हो सकता है लेकिन हमें वैश्विक स्तर पर निःस्वार्थ भाव से कार्य करने की महती आवश्यकता है। जब तक कोई देश दूसरे देश के दर्द (आतंकवाद) को अपना दर्द (आतंकवाद) नहीं समझेगा। तो यह दर्द (आतंकवाद) एक महामारी का रूप ले लेगा। जब महामारी (आतंकवाद) फैलती है तो न इसका कोई धर्म होता है, न इसका कोई देश होता है, न सीमा, यह सम्पूर्ण पृथ्वी को अपने चंगुल में ले लेती है। आज आतंकवाद ने एक महामारी का रूप धारण कर लिया है। अतः इस महामारी (आतंकवाद) पर नियंत्रण व नष्ट करने के लिए सम्पूर्ण राष्ट्रों को जिस तरह ऑपरेशन थेयटर में चिकित्सकों की टीम सहयोग की भावना से मरीज की बीमारी का ऑपरेशन कर शरीर

के अन्दर फैली बीमारी व रोगग्रस्त अंगों को काटकर मरीज के प्राणों की रक्षा करते हैं। उसी प्रकार विश्व के राष्ट्रों की टीम कैंसर रूपी आतंकवाद को खत्म करें व आतंकवाद का सहयोग करने वाले रोगग्रस्त देशों को सैन्य ऑपरेशन कर अलग करें तभी मानव जाति का कल्याण हो सकता है। आतंकवाद की लडाई को आपसी विश्वास, एकता, सहयोग, सक्रियता, सजगता, विशेष सुरक्षा प्रबन्ध आदि से ही जीता जा सकता है। इसके लिए दृढ़ इच्छा शक्ति, उदार मानसिकता व जन मानुष के सहयोग की भी महत्ती आवश्यकता है। समाज व देश में समानता, स्वतन्त्रता, बंधुत्व, धार्मिक सद्भावना, सहिष्णुता की भावना के विकास से आतंकवादी दैत्य को जड से नष्ट किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *फडिया, बी.एल. : अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति , आगरा सिद्धान्त एवं समकालीन राजनीतिक मुद्दे साहित्य भवन पब्लिकेशन्स।*
2. *रत्तू, कृष्ण कुमार : 26/11 आतंक का नया चेहरा विश्व आतंकवाद के बदलते परिदृश्यबुक एनक्लेव, जयपुर।*
3. *सिंहल, सुरेश चन्द्र : समकालीन राजनीतिक मुद्दे लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।*
4. *पलसानियॉ, एम.एस. : अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद एवं भारत को नई सुरक्षात्मक, चुनौतियॉ राज पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।*
5. *अजीत सिंह : वर्ल्ड टररिज्म टूडेःयू.एस.रिलेशन बुक एनक्लेव, जयपुर।*
6. *इंडिया टूडे : विभिन्न अंक*
7. *हिन्दुस्तान टाइम्स : दैनिक समाचार पत्र*
8. *द टाइम्स ऑफ इण्डिया : दैनिक समाचार पत्र*
9. *जनसत्ता : दैनिक समाचार पत्र*
10. *द इंडियन एक्सप्रेस : दैनिक समाचार पत्र*
11. *दैनिक भास्कर : दैनिक समाचार पत्र, जयपुर*
12. *राजस्थान पत्रिका : दैनिक समाचार पत्र, जयपुर*